Rohtas Mahila College SASARAM

Dr. Savitri Singh
Associate Professor (Sanskrit)

B.A. (HONS) Part III
Paper - V
Date: 17.07.2020

Topic: ऋक्सूक्तनिकर (ऋग्वेद) के आधार पर अग्नि देवता के स्वरूप का वर्णन

(दिनांक 16.7.2020 का शेष भाग)

ऋग्वेद में अग्नि देवता के त्रिविध जन्मों का वर्णन के क्रम में अग्नि का द्वितीय जन्म अन्तरिक्षस्थ जल से माना गया है। जो वास्तव में वैद्युताग्नि है। इसके अनन्तर अग्नि का तृतीय जन्म द्युलोक में होता है ऐसा कहा गया। पृथ्वी पर इस उत्तम अग्नि को मातरिश्वा लाये—

स जायमानः परमे व्योमन्याविरग्निरभवन्मातरिश्वने।

(ऋ० 1।143।2)

मातरिश्वा के समानान्तर यूनानी आख्यानों में प्रोमेथिउस की कथा मिलती है जो देवताओं के पास से अग्नि को चुराकर मनुष्यों के पास आया था। वेदों में अग्नि तथा मातरिश्वा के बीच कार्य-कारण-भाव माना गया है। सूर्य को भी द्युस्थानीय अग्नि का ही रूप कहा गया है।

कभी-कभी अग्नि को 'द्विजन्मा' कहा गया है (अयं स होता यो द्विजन्मा, 1।149।5) क्योंकि पृथ्वी तथा द्युलोक में ब्रह्माण्ड का विभाजन मानकर दोनों लोकों से अग्नि सम्बद्ध कहे गये हैं। ऐसी धारणा भी है कि वे वर्षा में द्युलोक से उतरकर वनस्पतियों में प्रविष्ट हो जाते हैं; इनसे वे पुनः प्रकट होते हैं।

→

अग्नि देवता अपने मानवीय रूप में पुरोहित, यज्ञ के प्रमुख देवता, होता, ऋत्विक तथा सर्वाधिक धनदाता है।

अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् ॥ (ऋ० ।।।।)

मनुष्यों से अग्नि का सम्बन्ध अन्य सभी देवताओं की अपेक्षा अधिक है। वे प्रत्येक गृह में निवास करते हैं। इसलिए वे दमूनस् और गृहपति कहे गये हैं।

पूर्वकाल के ऋषिगण तथा आधुनिक ऋषि भी उन्हें पूज्य मानते हैं। जो देवताओं को यज्ञशाला में लेआते हैं—

अग्निः पूर्वेभिर्ऋषिभिरीड्यो नूतनैरुत।
स देवाँ एह वक्षति ॥ 2 ॥

अग्नि देवता की स्तुति से अक्षय, यश देनेवाला तथा वीर संतानों से समन्वित धन प्राप्त होता है।

अग्निना रयिमश्नवत्पोषमेव दिवेदिवे।
यशसं वीरवत्तमम् ॥ 3 ॥

जिस ~~अग्नि में~~ यज्ञ में अग्नि विद्यमान रहते हैं, उसी यज्ञ में अर्पित पदार्थ देवताओं तक पहुँचता है। अग्नि के कर्म असामान्य हैं। वे सत्य के स्वरूप हैं, उनकी कीर्ति विविचरूप है। यज्ञ कर्ता के कल्याण के लिए अग्नि सदा सन्नद्ध हैं। स्तुतिकर्ता लोग प्रतिदिन उन्हें प्रणाम करते हैं। यज्ञों की रक्षा करना, यज्ञकर्म से मिलने वाले फल को यजमान तक पहुँचाना तथा

→